दुश्मन के हर दाँव-पेच पहचानें

30 वर्ष की तपस्या के बाद भी महेश पवित्रता का आनंद न ले सका। उसके मन में उठने वाले संघर्ष, झूठे प्यार की भूख, स्वप्नों की तामसिकता और संसार का आकर्षण उसको ईश्वरीय रस पाने में व्यवधान बना रहा। वह यह सोच-सोच कर संतुष्ट रहता था कि बड़े-बड़े ऋषि मुनियों ने तो इस मार्ग को अत्यंत कठिन माना है। परंतु उसे यह पता ही नहीं था कि वह भगवान से अपने स्वरूप की पहचान के बाद व उसके अधिकारी वत्स बनने के बाद सम्पूर्ण तपस्या में रत हैं। जो मार्ग ऋषियों के लिए कठिन था, वह उसके लिए सुलभ है। क्योंकि उसे राह दिखाने वाला स्वयं भगवान है। परंतु भगवान की छत्रछाया में पलकर भी यदि किसी को पवित्रता की साधना नितांत कठिन लगे तो वह व्यक्ति सच्चा साधक नहीं है। अवश्य ही भगवान को पाकर भी आत्म संतुष्टि हेतु इधर-उधर निहार रहा है। भगवान ने उसकी अंगुली पकड़ी है, शायद इसका उसे अहसास ही नहीं। अब समय पवित्रता का वरदान लेकर आया है, यह भी उसे भान नहीं। मनुष्य के प्यार में मनुष्य भगवान से किए हुए वायदों को भी भूल जाता है। वह यह भी भूल जाता है कि अब मनुष्यों का प्यार उसे संतुष्टि नहीं देगा।

मनुष्यों के प्यार में आकर्षित होकर वह भगवान से भी मुंह मोड़ने की सोचने लगता है। माया की प्रबलता में उसकी आँखों पर काली पट्टी बंध जाती है, और वह बरबस बह जाता है। उस गंदे नाले की खोज में, जिसमें जन्म-जन्म बहकर उसने कष्ट उठाये।

इस युद्ध में माया का सम्पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है

समय ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रहा है, त्यों-त्यों विनाश के काले बादल धरती पर घेराव डालते जा रहे हैं। रावण राज्य भी अपने अन्तिम दिन गिन रहा है। परंतु समाप्ति से पहले रावण अपनी पूरी सेना सहित, सम्पूर्ण बल पूर्वक आक्रमण करता है। इस बात का सम्पूर्ण बोध अब योगियों को होना चाहिए। अर्थात् ज्यों-ज्यों हम आगे बढ़ेंगे, संसार में कामुक्ता का प्रकोप भी बढ़ेगा। विदाई प्राणी के मन पर काम ही काम सवार है। चारों और कामुक वातावरण है। ऐसे में योगी जनों का माया के सभी सूक्ष्म वीरों का स्पष्ट ज्ञान होना अति आवश्यक है। जैसे यदि दो पहलवान आपस में लड़ रहे हों और एक पहलवान को यह ज्ञान ही न हो कि दूसरा पहलवान कौन-सा दाँव लगा सकता है, तो समय पर वह उसके दाँव को काट नहीं सकेगा और हार जायेगा। परंतु यदि उसे दूसरे पहलवान के सभी दाँव-पेच का ज्ञान हो तो वह उसको एक भी चाल नहीं चलने देगा। ठीक उसी प्रकार हमारा भी माया से जबरदस्त युद्ध है। हमें विजयी बनने के लिए माया के सभी सूक्ष्म रूपों का ज्ञान होना ही चाहिए। अन्यथा हमारे मुख से यही निकलेगा कि हमें क्या पता था कि माया इस रूप में भी वार कर सकती है। अगर हम माया के वार को, दूसरों का प्यार व सहयोग समझ लेंगे, माया को ही सुखों की अनुभूति मान लेंगे, तो तब हमारे हाथ लगेगा केवल पश्चाताप...।

अतः हमें इस अंतिम पड़ाव में माया के हर सूक्ष्म चाल, दाँव-पेच को समझते हुए, उसकी चाल को नाकाम करना है। हमें हर माया के सूक्ष्म स्वरूप को, उसकी हर चाल को समझते हुए उसका सामना भी करना है। जैसे श्रीकृष्ण अर्जुन के साथ था तो उसे निश्चय था कि विजय तो हमारी ही होगी। भले वह कभी-कभी निराश और उदास हो जाता था किन्तु उसे श्रीकृष्ण का साथ और उनकी विजय निश्चित है, उस स्मृति ने उसे अपने मकसद में कामयाबी दिलाई।

तो ज़रा सोचो, हमारे साथ कौन है, हमें कौन साथ दे रहा है, हमारा सारथी कौन है, उसकी स्मृतियां व सम्पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। इस समय हमें स्वयं भगवान साथ दे रहा है, हम अकेले युद्ध न लड़ें। दोनों साथ-साथ होकर आगे बढ़ें। वो सर्वशक्तिवान- सर्वशक्तियों सहित हमारे साथ है। तो सोचो, भला उनके सामने किसी की भी, कैसी भी चाल चल सकेगी! इसीलिए समय और सारथी को पहचानें और आगे बढ़ें। बाबा हर रोज़ माया के सूक्ष्म स्वरूप कैसे वार करेंगे, उसके दाँव-पेच हमें मुरलियों(परमात्मा के महावाक्य) के माध्यम से याद दिलाते हैं। इसलिए आप इस सूक्ष्म स्वरूप को जानों और मैं साथ हूँ उसका विश्वास प्रगाढ़ करो। समय और सर्वशक्तिवान साथी का लाभ उठाओ।

किसी भी परिस्थिति में त्रिकालदर्शी की सीट पर स्थित रहेंगे तो भयभीत नहीं होंगे

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

जब नया मकान हमको बनाना है तो पुराने का ज़रूर विनाश करना होगा। पुराने के बीच में नया तो नहीं बनायेंगे ना! तो हम लोगों ने संगम पर चैलेन्ज की है कि पुरानी सृष्टि जाने वाली है, नई सृष्टि आने वाली है।

बाबा ने हमें त्रिकालदर्शी बनाया है इसलिए किसी भी दृश्य को देखते हमें भय नहीं हो सकता। वर्तमान में कोई रो रहा है, कोई चिल्ला रहा है, कोई मर रहा है, कोई भूख से तड़प रहा है या अर्थक्वेक हो रहा है या कुछ भी हो रहा है, लेकिन हम सिर्फ उस वर्तमान नज़ारे को नहीं देखते हैं। हम इस वर्तमान में भविष्य क्या छिपा हुआ है उसे जानते हैं। हमें तीनों ही कालों की नॉलेज है। नॉलेज को कहते ही हैं- नॉलेज इज़ लाइट, नॉलेज इज़ माइट, तो नॉलेज की लाइट होने के कारण हम तीनों कालों को देखते हैं, सोचते हैं और फिर माइट होने के कारण हमको कोई दुःख की फीलिंग नहीं आती। नहीं तो कभी भी ऐसा कोई दृश्य देखते हैं तो घबरा जाते हैं या भय से कुछ अपना होश नहीं रहता, अनकांसेस हो जाते हैं, ज्ञान-योग सब भूल जाते हैं, लेकिन हमें ज्ञान-योग भूल नहीं सकता क्योंकि हमने ही तो कहा है कि हमारा राज्य आने वाला है और हम बापदादा के साथ पुरानी सृष्टि के विनाश और नई सृष्टि की स्थापना के निमित्त हैं। जब नया मकान हमको बनाना है तो पुराने का ज़रूर विनाश करना होगा। पुराने के बीच में नया तो नहीं बनायेंगे ना! तो हम लोगों ने संगम पर चैलेन्ज की है कि पुरानी सृष्टि जाने वाली है, नई सृष्टि आने वाली है। कलियुग जा रहा है, सतयुग आ रहा है। रात जायेगी तब तो दिन आयेगा ना! तो हम लोगों को यह पता है कि यह विनाश तो होना ही है, 'नथिंग न्यु'। यह कल्याणकारी विनाश है। तो विनाश देखने के लिए त्रिकालदर्शी स्थिति के तख्त पर बैठना है, अगर त्रिकालदर्शी की स्थिति में स्थित नहीं होंगे, तो भयभीत होंगे, घबरायेंगे। दूसरी बात - यह विनाश कोई साधारण विनाश नहीं है, कल्याणकारी है। अब कहेंगे नाम विनाश है, सबकी मृत्यु होगी फिर कल्याणकारी कैसे हो सकता है? मृत्यु तो खराब चीज़ होती है। लेकिन यह विनाश क्यों कल्याणकारी है? क्योंकि मैजारिटी आत्मायें चाहती हैं कि हम इस चक्कर से छूटें, हमको तो मोक्ष चाहिए। तो विनाश के बाद हमें जीवनमुक्ति मिलेगी लेकिन दूसरी आत्मायें परमधाम में जाकर रेस्ट करेंगी, दूसरी आत्माओं की जो शुभ इच्छा है, इस चक्र से निकलना चाहते हैं, वह तो इस विनाश के बाद ही पूरी होगी। हम लोगों के लिए कल्याणकारी इसलिए है क्योंकि हमको जीवनमुक्ति का वर्सा मिल जायेगा। स्वर्ग के फाटक यही विनाश खोलेगा। तो विनाश में दो कल्याण हैं- हमारे लिए स्वर्ग के गेट खुलेंगे, दूसरों को मुक्ति मिलेगी इसीलिए यह नॉलेज होने के कारण ही हम घबराते व भयभीत नहीं होते हैं।

बापदादा की प्रेरणाओं को कैच करने का साधन - प्योरिटी

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

बाबा हम बच्चों को याद की यात्रा में रहने की अनेक प्रेरणायें देते रहते हैं। अन्तःवाहक शरीर से सेवा करने के लिये स्वयं की भी ऐसी स्थिति तैयार करनी है। बाबा का रोज़ हम बच्चों के प्रति यही इशारा है, यही सूक्ष्म अभ्यास हरेक को बढ़ाना है। तो हरेक कौन-सा सूक्ष्म पुरुषार्थ करते हो? प्योरिटी पर ही सारा मदार है। प्योरिटी है तो लाइन क्लीयर है। बाबा की जो भी प्रेरणायें हैं वह हम तभी कैच कर सकते हैं जब सूक्ष्म में भी प्योरिटी की धारणा है। अगर प्योरिटी नहीं तो हम अपनी प्रेरणा न तो वहाँ तक पहुँचा सकते हैं और न प्राप्त ही कर सकते हैं।

हरेक अपने से पूछें कि हम बाबा के पास किसलिए आये हैं? हम सब यहाँ आये हैं योग कमाने। योग ही हमारी पढ़ाई का सार है। जिसको बाबा कहते मनमनाभव। तो हमें प्रतिदिन यह चेक करना है कि मेरा घाटा और फायदा कहाँ तक है? कितना हमने योग बल जमा किया? वह शक्ति बढ़ती जा रही है या घटती जा रही है? योगी के लिये फर्स्ट है प्योरिटी। तो प्योरिटी की सब्जेक्ट में कितने मार्क्स हमने जमा किए हैं?

चेक करना है कि योग के बीच कोई विघ्न तो नहीं आता? जैसे बाबा ने कहा तुम बच्चे यहाँ आये हो अपनी झोली भरने लेकिन देखना झोली में छेद तो नहीं है? लीक तो नहीं होती? अगर प्योरिटी की वृत्ति सूक्ष्म कम्पलीट होगी तो लीक हो नहीं सकती। इसके लिए सदैव भाई-भाई की, स्नेह की वृत्ति चाहिए।

अगर हम कहते हैं कि हम प्यार के सागर के बच्चे हैं तो अपने से पूछो कि हम कहाँ तक प्रेम स्वरूप बने हैं? हम आत्मा स्नेह स्वरूप हैं? अगर स्नेह की सब्जेक्ट में ज़रा-सी लीकेज होगी तो बाप से स्नेह की लाइन टूट जायेगी। स्नेह की लाइन आपस में भी टूटी तो अन्दर वह ठक-ठक करती रहेगी। फिर योग की व स्नेह स्वरूप की अनुभूति हो नहीं सकती। बाबा ने जो दिया है – ज्ञान, प्यार, शक्तियां उन सबका रिटर्न दो और रिटर्न अर्थात् वापस चलने की तैयारी करो। इसके लिए मुख्य है समेटने की शक्ति।

अब इस शक्ति की परसेन्टेज को बढ़ाओ। बाबा ने जो ऋण दिया है वह रिटर्न कर रहे हैं तथा रिटर्न जाने की तैयारी कर रहे हैं? यही चार्ट चेक करो। योग का चार्ट बढ़ाते-बढ़ाते हमें कर्मातीत बनना है तो अपने से पूछो – कर्मातीत बनने के लिये हमारे सारे हिसाब चुक्तू हो गये हैं? कोई भी पंछी किसी भी घड़ी उड़ सकता है, इस श्वास का कोई भरोसा नहीं। इसलिए हमेशा अपना खाता कम्पलीट कर रखना है। अगर हमारे योग का चार्ट ठीक है तो हम अपने पुरुषार्थ से सदा सन्तुष्ट रहेंगे।

सवेरे-सवेरे खायें बाबा की दी खुराक

राजयोगिनी दादी जानकी जी

मुरली सुनते-सुनते शरीर छूटे तो महान् भाग्यशाली हैं। जहाँ जीना है वहाँ अमृत पीना है। जिसने पहले कभी भी मुरली मिस की हो वे यह दृढ़ संकल्प कर लें कि मरने तक मुरली मिस नहीं करेंगे।

सवेरे-सवेरे बाबा कितनी अच्छी खुराक खिला देता है। खुराक सवेरे खाई जाती है। दिन में खायेंगे तो हज़म नहीं कर सकेंगे। खुराक माना जिसमें दवा भी हो तो दुआ भी हो और जो ज़रूरत हो वह सब शक्ति मिलती रहे। बाबा सबके मन की आशा पूर्ण करता है। हमारे मन में बाबा से मिलन के सिवाए और कोई आश न रहे तो सदा मिलन मनाते रहेंगे। बाबा मुरली भी चलाते हैं तो सब कहते हैं बाबा ने मेरे लिए मुरली चलाई। इसलिए मुरली से बहुत प्यार है। जिसने पहले कभी भी मुरली मिस की हो वे यह दृढ़ संकल्प कर लें कि मरने तक मुरली मिस नहीं करेंगे। मुरली सुनते-सुनते शरीर छूटे तो महान् भाग्यशाली हैं। जहाँ जीना है वहाँ अमृत पीना है। संगमयुग में केवल बाबा, मुरली और मधुबन चाहिए। बाबा है तो मुरली है, मुरली है तो मधुबन है।

बाबा हम सबको एक जैसा बेहद प्यार करता है क्योंकि बेहद का बाबा है। बाबा से इतना प्यार हो जो किसी इन्सान से तो क्या देव आत्मा से भी न हो। हमको पता है हम स्वर्ग में जाने वाले हैं, लक्ष्मी-नारायण के राज्य में जाने वाले हैं। हम त्रेतायुगी नहीं है जो ईर्ष्या, लड़ाई, झगड़ा, द्वेष भाव रखें। हमने कभी यह सोचा भी नहीं कि यह ब्रह्मा की मत है या शिवबाबा की मत है। सदा ही हमारे मन से निकला भगवान् भाग्यविधाता है। इसमें शिवबाबा न होता तो हम कैसे खिंचे चले आते, ब्रह्मा बाबा न होता तो हम किसके पास आते। गुरु है शिवबाबा और गोविन्द है यह ब्रह्मा बाबा, जिसने गऊओं को सम्भाला। अभी तक कन्याओं, माताओं की कैसे सम्भाल कर रहा है। उन्हें लायक बनाया है, शेरनी शक्ति बनाया है। मुरली के आधार से हमारी रक्षा हुई है। तो सदा मुरली के पीछे मस्ताना बनना है। मस्ती तभी चढ़ती है जब मुरली सुनते हैं। बाबा कहते हैं किसकी दबी रहेगी धूल में, किसकी राजा खाये। हमको खुशी है तन, मन, धन और समय सफल हो गया। जैसे बाबा ने कहा वैसे हमने फॉलो किया। श्रीमत मिलती है कि सब सफल करो। तो हमको तन, मन, धन और समय सफल करना है। सबसे ज़्यादा कीमती, समय है। उसके पीछे कीचक पड़ते हैं जो समय बरबाद करते हैं। माया हमारे पास आये ही क्यों? हम खबरदार होशियार रहें, शिवशक्ति होकर रहें। माया कमज़ोर के पीछे आती है। बहादुर के पीछे माया आ नहीं सकती। बाबा हमारा साथी है।